ISSN-2582-144X

स्वयं सहायता समूह : ग्रामीण नारी आर्थिक उत्थान का सशक्त माध्याम

कमला महाजनी[1] एवं गुंजन सनाढ्य[2]

"स्वयं सहायता समूह, समान विचारधारा वाले व्यक्तियों का समूह है, जिसमे एक गैर-वित्तीय प्रकृति की अपनी समस्याओं को हल करने के लिए सशक्त हो जाता है, जैसे कि कच्चे माल और इनपुट की आपूर्ति, विकास के लिए प्रौद्योगिकी की शिक्षा, शिक्षा और प्रशिक्षण को बेहतर तरीके से अपनाना इत्यादि। स्वयं सहायता समूह शोषण से उबरने के लिए आवश्यक हैं, ग्रामीण लोगों की आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए आत्मविश्वास पैदा करते हैं, विशेष रूप से उन महिलाओं के बीच जो सामाजिक संरचना में ज्यादातर अविभाज्य हैं। स्वयं सहायता समूह को सरकार द्वारा बढ़ावा दिया जाता है जिससे की भारत में महिलाओ को उद्यमी होने के लिए संसाधनहीन नहीं होना पड़ता हैं।"

भारतवर्ष में महिलाओं को स्वयं सहायता समूह के किसी एक किलेबंदी और विकास में शामिल होने का मौका दिया जाता है, ताकि भावी उद्यमी और कुशल श्रमिक का निर्माण हो सके एवं स्वयं सहायता समूह को सरकार द्वारा बढ़ावा दिया जाता है जिससे की भारत में महिलाओ को उद्यमी होने के लिए संसाधनहीन नहीं होना पड़ता हैं। जब स्वयं सहायता समूह भारत में महिलाओं के लिए उपयुक्त कार्य करने के लिए प्रशिक्षण सुविधाओं की व्यवस्था करते हैं, तो बैंक को विनिर्माण और व्यापारिक गतिविधियों को करने के लिए वित्तीय सहायता की व्यवस्था करनी चाहिए, विपणन सुविधाओं को व्यवस्थित करना, सरकार द्वारा स्वयं सहायता समूह के उत्पाद की खरीद, महिलाओं की योग्यता बढ़ाने की व्यवस्था हेतु प्रशिक्षण की व्यवस्था, नेतृत्व की गुणवत्ता के मामले में और प्रशासनिक क्षमता रखने के लिए स्वयं द्वारा स्वयं सहायता समूह के प्रबंधन की व्यवस्था होनी चाहिए । ऐसा करने से सामाजिक आंदोलन के समर्थन के रूप में और महिला शसक्तीकरण स्वयं सहायता समूह कमोबेश समाज का एक हिस्सा बन जाते हैं।

स्वयं सहायता समूह, समान विचारधारा वाले व्यक्तियों का समूह है जिसमे एक गैर–वित्तीय प्रकृति की अपनी समस्याओं को हल करने के लिए सशक्त हो जाता है, जैसे कि कच्चे माल और इनपुट की आपूर्ति, विकास के लिए प्रौद्योगिकी की शिक्षा, शिक्षा और प्रशिक्षण को बेहतर तरीके से अपनाना। स्वयं सहायता समूह शोषण से उबरने के लिए आवश्यक हैं, ग्रामीण लोगों की आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए आत्मविश्वास पैदा करते हैं, विशेष रूप से उन महिलाओं के बीच जो सामाजिक संरचना में ज्यादातर अविभाज्य हैं। ये समूह उन्हें शोषण से निपटने के लिए आमने–सामने आने और एक–दूसरे से ताकत हासिल करने में सक्षम बनाते हैं, जिसे वे कई रूपों में बदल रहे हैं। स्वयं सहायता समूहों की अवधारणा को–ऑपरेटिव दर्शन में इसकी उत्पत्ति थी और इनक्रेडिट क्षेत्र में राष्ट्रीय संघों सहित बड़े और सह–संचालकों ने प्राथमिक सहकारी क्रेडिट सोसाइटी की तुलना में किसी भी बेहतर स्वयं सहायता समूह के बारे में नहीं सोचा।

चूंकि स्वयं सहायता समूह ग्रामीण गरीबों के छोटे और आर्थिक रूप से समरूप समूह हैं, वे स्वेच्छा से निम्नलिखित को प्राप्त करने के लिए एक साथ आ रहे हैं।

- नियमित रूप से छोटी राशि बचाने के लिए ।
- आम फंड में योगदान के लिए परस्पर सहमत होना।
- उनकी आपातकालीन जरूरतों को पूरा करने के लिए ।
- सामूहिक निर्णय लेने के लिए ।
- सामूहिक नेतृत्व आपसी चर्चा के माध्यम से संघर्ष को हल करने के लिए।
- समूह द्वारा तय की गई शर्तों के साथ संपार्श्विक निरू शुल्क ऋण प्रदान करने के लिए।

विशेष रूप से, भारत सहित कई विकासशील देशों में ग्रामीण ऋण के क्षेत्र में स्वयं सहायता समूह आंदोलन तेजी से स्वीकार किया जा रहा है, जो सामान्य तौर पर बैंक से ऋण सुविधा का लाभ नहीं उठा सकते हैं, उन के लिए एक वाहन माना जाता है। स्वयं सहायता समूह को ऐसे लोगों के समूह के रूप में परिभाषित किया जाता है, जिनके पास समान मुद्दे या जीवन की स्थिति का व्यक्तिगत अनुभव होता है, या तो सीधे या उनके दोस्तों के माध्यम से अनुभवों को साझा करने से उन्हें एक दूसरे को एक अद्वितीय गुणवत्ता प्रदान करने में मदद मिलती है और व्यावहारिक जानकारी और मुकाबला करने के तरीकों को पूल करने में मदद मिलती है।

चित्र 1 : कृषि विज्ञान केंद्र, बूंदी, राजस्थान के प्रयासों से निर्मित एवम् सफल स्वयं सहायता समूह की बैठक

कृषि विश्वविद्यलय कोटा, राजस्थान
[1]कृषि विज्ञान केंद्र, बूंदी, राजस्थान
[2]कृषि विज्ञान केंद्र, कोटा, राजस्थान

चित्र 2 : कृषि विज्ञान केंद्र, बूंदी, राजस्थान के प्रयासों से निर्मित एवम् सफल स्वयं सहायता समूह की बैठक

क्या है संकल्पना?

एक सहायता समूह पंजीकृत या अपंजीकृत हो सकता है, यह छोटे उधमियों का एक ऐसा समूह है जो सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि को सुधारने का कार्य करता है, ये समूह छोटे धनराशि को फंड के रूप में इकट्ठा करते हैं फिर आवश्यकता पड़ने पर सामाजिक मदद में योगदान देते हैं। हमारे देश के ग्रामीण इलाकों में, छोटे उद्यमियों के लिए, श्रमिकों के लिए, स्वयं सहायता समूह बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

क्या है परिभाषा ?

स्वसहायता समूह, सदस्यों को आर्थिक लाभ को ठोस रूप से और संयुक्त जिम्मेदारी से बाहर निकालने में सक्षम बनाने के उद्देश्य से बनाए गए गरीबों के छोटे अनौपचारिक संघ हैं। स्वयं सहायता समूहों का गठन ग्रामीण और शहरी गरीबों द्वारा स्वेच्छा से किया जाता है ताकि समूह के निर्णय के अनुसार एक आम कोष में बचत और योगदान दिया जा सके और सामाजिक और आर्थिक रूप से उत्थान परिवारों और समुदाय के उत्थान के लिए मिलकर काम किया जाए।

कैसा होता हैं एक स्वयं सहायता समूह ?

एक स्वयं सहायता समूह में सामान्य रूप से समान आर्थिक दृष्टिकोण और सामाजिक स्थिति के आठ से दस व्यक्तियों ध महिलयों (अधिकतम के साथ) की स्थिति होती है। यह आर्थिक सुधार और संसाधनों की प्रगति और स्वतंत्रता बढ़ाने जैसे उद्देश्यों को बढ़ावा देता है। समूह के समुचित कार्य के साथ–साथ समूह के सदस्यों और नियमों से संबंधित कुछ नियमों के प्रावधान के लिए इसके अपने–अपने कानून हैं। इस तरह के समूह का रूप अधिकतर अनौपचारिक/अपंजीकृत आधार पर होता है। सदस्यों की आवधिक बैठकें उनकी समस्याओं (आर्थिक और सामाजिक) को हल करने के लिए आयोजित की जाती हैं और वे सदस्यों की निश्चित बचत जमा करते हैं ।सदस्यों की बचत समूह के नाम पर एक बैंक के साथ रखी जाती है और समूह की अधिकृत प्रस्तुति बैंक खाते का संचालन करती है। समूह द्वारा तय की गई दर (जो आमतौर पर बैंकों से अधिक होती है) में खपत सहित उपभोग के लिए सदस्यों को ऋण देने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली बैंकिस में रखी गई जमा राशि।

धन के स्रोत सदस्यों की बचत, प्रवेश शुल्क, ब्याज–ऋण, संयुक्त व्यापार संचालन की आय और निवेश से आय का योगदान हैं। यह ऋण, सामाजिक सेवाओं और सामान्य निवेश के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

इस तरह एक समूह कार्रवाई और परिवर्तन का आधार बन जाता है। यह निरंतर संपर्क और वास्तविक प्रयासों के माध्यम से बढ़ावा देने वाले संगठन और गरीबों के बीच आपसी विश्वास के लिए संबंधों की इमारतों में मदद करता है। स्वयं सहायता समूह उपभोक्ता ऋण और उत्पादन ऋण के बीच अंतर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, इसके निहितार्थ के लिए क्रेडिट प्रणाली का विश्लेषण करते हैं और लक्ष्य समूहों की अर्थव्यवस्था, संस्कृति और सामाजिक स्थिति में परिवर्तन करते हैं, ऋण की आसान पहुंच प्रदान करते हैं और प्रभावी नियंत्रण के लिए संगठन/सुविधा प्रदान करते हैं। स्वयं सहायता समूह ग्रामीण महिलाओं को उद्यमशील गतिविधियों में प्रवेश करने के लिए प्रोत्साहित करने और उन्हें उद्यमशील गतिविधियों में प्रोत्साहित करने के उद्देश्य का पालन करता है।

स्वयं सहायता समूह महिलाओं की स्थिति की भागीदारी, निर्णय लेने वालों और लोकतांत्रिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में लाभार्थियों की समानता को बढ़ाते हैं। ग्रामीण गरीब विभिन्न कारणों से असक्षम हैं जैसेय अधिकांश सामाजिक रूप से पिछड़े, अनपढ़, कम प्रेरणा और खराब आर्थिक आधार के साथ होते हैं।

एक गरीब सामाजिक–आर्थिक शब्दावली में कमजोर नहीं है, लेकिन अज्ञानता और सूचना तक पहुंच का अभाव है, जो आज के विकास की प्रक्रिया के सबसे महत्वपूर्ण घटक हैं। हालॉकि, एक समूह में, उन्हें कई कमजोरियों को दूर करने के लिए सशक्त किया जाता है, इसलिए स्वयं सहायता समूह की आवश्यकता होती है जो इस प्रकार हैं–

- व्यक्तिगत सदस्यों के संसाधनों को उनके सामूहिक आर्थिक विकास के लिए जुटाना।
- गरीबों के रहन–सहन के उत्थान के लिए।
- बचत की आदत बनाने के लिए, स्थानीय संसाधनों का उपयोग।
- समूह के अंतर के लिए अलग–अलग कौशल जुटाना।
- अधिकार के बारे में जागरूकता पैदा करना।
- जरूरत पड़ने पर सदस्यों की वित्तीय सहायता करना।
- उद्यमिता विकास।
- समस्याओं की पहचान करने, विश्लेषण करने और समूहों में समाधान खोजने के लिए।
- गाँव के सामाजिक–आर्थिक विकास के लिए एक मीडिया के रूप में कार्य करना।
- गैर सरकारी संगठनों की संस्था के साथ संबंध विकसित करना।
- कौशल विकास के लिए प्रशिक्षण का आयोजन करना।
- ऋणों की वसूली में सहायता करना।
- आपसी समझ हासिल करने के लिए, विश्वास और आत्मविश्वास विकसित करें।
- टीम वर्क बनाने के लिए।
- नेतृत्व के गुणों का विकास करना।

ग्रामीण ऋण के लिए एक प्रभावी वितरण चौनल के रूप में इसका उपयोग करने के लिए।

स्वयं सहायता समूह की विशेषताएं– क्या है विशेषताएं ?

वे आम तौर पर एक छोटे फंड का निर्माण करते हैं जो कि उनकी छोटी बचत में योगदान करते हैं।

चित्र 3 : कृषि विज्ञान केंद्र, बूंदी, राजस्थान के प्रयासों से निर्मित एवम् सफल स्वयं सहायता समूह की बैठक

समूह गैर–सरकारी संगठनों (एनजीओ) की मदद से अक्सर संचालन की एक लचीली प्रणाली विकसित करते हैं और अपने सामान्य लोकतांत्रिक तरीके का प्रबंधन करते हैं ।

समूह आवधिक बैठकों में ऋण अनुरोधों पर विचार करते हैं, प्रतिस्पर्धा के दावों के साथ–साथ संसाधनों को अधिक आवश्यकताओं के संबंध में सर्वसम्मति से निपटाया जाता है।

लोनिंग मुख्य रूप से पारस्परिक आवश्यकता और विश्वास के आधार पर न्यूनतम साध्यता और बिना किसी ठोस सुरक्षा के होता है ।

उधार ली गई राशि छोटी, लगातार और छोटी अवधि के लिए होती है ।

ब्याज की दरें समूह से समूह में भिन्न होती हैं ऋणों के उद्देश्य के आधार पर अक्सर बैंकों की तुलना में अधिक होते हैं लेकिन साहूकारों की तुलना में कम होते हैं।

आवधिक बैठकों में, धन इकट्ठा करने के अलावा, उभरते हुए ग्रामीण, सामाजिक और आर्थिक मुद्दों पर चर्चा की जाती है।

स्वयं सहायता समूह के कार्य

स्वयं सहायता समूह के महत्वपूर्ण कार्य निम्नलिखित हैं –

- सदस्यों को आत्मनिर्भर और आत्म–निर्भर बनने में सक्षम बनाना
- सदस्यों को उनकी सामाजिक और आर्थिक समस्याओं पर चर्चा करने के लिए एक मंच प्रदान करना।
- सदस्यों की निर्णय लेने की क्षमता को विकसित करना और प्रोत्साहित करना।
- आपसी मदद की भावना को बढ़ावा देना और सदस्यों के बीच सहयोग ।
- सदस्यों में शक्ति और आत्मविश्वास की भावना पैदा करना, जो उन्हें अपनी समस्याओं को दूर करने की आवश्यकता है ।

सदस्यों को संगठनात्मक मजबूती प्रदान करना। मौद्रिक लेन–देन को समझने के लिए बुनियादी कौशल आवश्यक हैं।

मामले (केस) का अध्ययन

कृषि विज्ञान केंद्र, बूंदी द्वारा स्वयं सहायता समूह बनाए गए हैं जिसमे से एक समूह की चर्चा यहां करते हैं इस समूह में 11 महिलाये प्रसंस्करण एंव मूल्य संवर्धन का काम कर रही हैं। शुरुआत में इन्होंने कृषि विज्ञान केंद्र, बूंदी में "फल एंव सब्जी प्रसंस्करण एंव मूल्य संवर्धन" के प्रशिक्षण में भाग लिया जहां से इस समूह में कौशल का विकास हुआ, और इन महिलओं ने उद्यमी होने का फैसला लिया। इससे पहले ये महिलाये सिर्फ पैसे इकठहा किया करती थी ओर समय आने पे इसका उपयोग किया करती थी परंतु अब यह समूह विभिन्न प्रकार के आचार जैसे हरी मिर्च, आंवला, नींबू, आम, मिश्रित सब्जियों का आचार, और लहसुन इत्यादि आचार घरेलू स्तर तक बना कर उसको ग्रामीण स्तर पर एवं गाँव के मेलों में बेच रहीं हैं जिससे उनकी आमदनी लगभग 5000/– रुपये प्रतिमाह हो जाती है। जो मुनाफा वो कमाती हैं उसी से वो दोबारा कच्चा माल लेकर आती हैं। इनकी प्रति माह बैठक होती है जिसमे की ये अगले महीने के काम और अन्य समस्याओं के समाधान पर चर्चा करती हैं।

निष्कर्ष

स्वयं सहायता समूह महिलाओं की स्थिति की भागीदारी, निर्णय लेने वालों और लोकतांत्रिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में लाभार्थियों की समानता को बढ़ाते हैं। कृषि विज्ञान केंद्र, बूंदी द्वारा स्वयं सहायता समूह बनाए गए हैं जिसमे से एक समूह की चर्चा यहां करते हैं इस समूह में 11 महिलाये प्रसंस्करण एंव मूल्य संवर्धन का काम कर रही हैं। जिससे उनकी आमदनी लगभग 5000/– रुपये प्रतिमाह हो जाती है।

चित्र 4 : कृषि विज्ञान केंद्र, बूंदी, राजस्थान के प्रयासों से निर्मित एवम् सफल स्वयं सहायता समूह की बैठक